Problems of Agricultural Labourers (Part-B)

भारत में कृषि श्रमिकों की समस्या :

भारत में कृषि-श्रमिकों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। सन् 1961 में कृषि-श्रमिकों की संख्या मात्र 3.2 करोड़ थी जो सन् 1981 में बढ़कर 5.6 करोड़ हो गई सन् 1991 में और बढ़कर 7.46 करोड़ तक पहुँच गई। वर्तमान में इनकी संख्या लगभग 8 करोड़ है। कृषि-श्रमिकों की संख्या में हुई यह वृद्धि देश की कुल श्रम-शक्ति का लगभग 28 प्रतिशत है, जबकि कुल जनसंख्या का लगभग 8.8 प्रतिशत है।

भारत में कृषि-श्रमिकों की संख्या में वृद्धि के कारण :

भारत में कृषि-श्रमिकों की संख्या में निरंतर हो रही वृद्धि के लिए निम्नांकित कारण उत्तरदायी है :—

(1) कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों की समाप्ति :- गाँवों में परम्परा से चले आ रहे कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों के चौपट हो जाने के कारण इन कुटीर उद्योगों से जुड़े ग्रामीण परिवारों को अन्य रोजगार की व्यवस्था न होने के कारण अपनी जीविका चलाने के लिए कृषि-मजदूर के रूप में काम करने के लिए विवश होना पड़ा। इस प्रकार कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों की समाप्ति के कारण कृषि-श्रमिकों की संख्या

Scanned with CamScanner

में वृद्धि हुई।

(ii) ऋण का भार :→ गाँवों में निवास करने वाले वे कृषक परिवार श्रमिक बन गए जो गाँवों के साहूकार और महाजन के ऋण - भार से अत्यधिक दबे हुए थे।

(iii) अलाभकारी जोतें :→ भारत में अधिकांश अलाभकारी जोतें हैं। ये अलाभकारी जोतें कृषक के सम्पूर्ण परिवार का भरण-पोषण करने में सक्षम नहीं हो पाती। अतः परिवार के कुछ सदस्यों को कृषि-श्रमिक के रूप में कार्य करना पड़ता है। यह कारण भी कृषि-श्रमिकों की संख्या में वृद्धि के लिए उत्तरदायी है।

(iv) जनसंख्या में तेजी से वृद्धि :→ देश की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। देश के गाँवों में रोजगार के अन्य साधन उपलब्ध न होने के कारण कृषि-पर जनसंख्या का दबाव तेजी से बढ़ता जा रहा है। भारत में भूमि व्यवस्था सुधार के बाद भी अत्यधिक दोषपूर्ण है।

(v) बेरोजगारी :- देश में तेजी से बढ़ रही बेरोजगारी भी कृषि-श्रमिकों की संख्या में

वृद्धि के लिए उत्तरदायी हैं। बेरोजगारी के कारण गाँव के लोग कृषि-श्रमिक का काम करने के लिए भी तत्पर रहते हैं।

Scanned with CamScanner